shrI Chalisa

विन्ध्येश्वरीचालीसा

Document Information

Text title : Vindhyeshvari Chalisa

File name : vindhyeshvarIchAlIsA.itx

Category : devii, otherforms, devI, chAlisA, hindi

Location : doc_devii

Proofread by : Rajesh Thyagarajan

Latest update : December 4, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 4, 2022

sanskritdocuments.org

विन्ध्येश्वरीचालीसा

दोहा-
नमो नमो विन्ध्येश्वरी, नमो नमो जगदम्ब ।
सन्त जनों के काज को, करती नहीं विलम्ब ।
जय जय जय विन्ध्याचल रानी ।
आदि-शक्ति जग विदित भवानी ॥

सिंहवाहिनी जै जगमाता ।
जै जै जै त्रिभुवन सुखदाता ॥

कष्ट निवारिनि जै जगदेवी ।
जै जै सन्त असुर सुरसेवी ॥

महिमा अमित अपार तुम्हारी ।
शेष सहस मुख वर्णत हारी ॥

दीनन को दुख हरत भवानी ।
नहिं देख्यो तुम सम कोइ दानी ॥

सब कर मनसा पुरवत माता ।
महिमा अमित भक्त विख्याता ॥

जो नर ध्यान तुम्हारो लावै ।
सो तुरतहिं वाञ्छित फल पावै ॥

तुही वैष्णवी तुही रुद्रानी ।
तुही शारदा अरु ब्रह्मानी ॥

रमा राधिका श्यामा काली ।
तुही मातु सन्तन प्रतिपाली ॥

उमा माधवी चण्डी ज्वाला ।

वेगि मोहिं पर होहु दयाला ॥

तूही हिङ्ग लाज महरानी ।
तुही शीतला अरु विद्यानी ॥

दुर्गा दुर्ग विनाशिनि माता ।
तुही लक्ष्मी जग सुखदाता ॥

तूही जाह्नवी अरु उत्रानी ।
हेमावती अम्ब निर्वानी ॥

अष्टभुजी बाराहिनि देवी ।
करत विष्णु शिव जाकर सेवी ।
चौसट्ठी देवी कल्यानी ।
मङ्गला गौरी सब गुणखानी ॥

पाटन मुम्बा दन्तकुमारी ।
भद्रकालि सुनु विनय हमारी ॥

वज्रधारिणी शोक-नाशिनी ।
आयुरक्षिणी विन्ध्यवासिनी ॥

जया और विजया बैताली ।
मातु सङ्कटा अरु विकराली ॥

नाम अनन्त तुम्हार भवानी ।
बरनै किमि मानुष अज्ञानी ॥

जापर कृपा मातु तव होई ।
तो वह करै चहै मन सोई ॥

कृपा करहु मोपर महरानी ।
सिद्ध करिय अब यह मम बानी ॥

जो नर धरै मातुकर ध्याना ।
ताकर सदा होय कल्याना ॥

बिपति ताहि सपनेहुँ नहिं आवे ।
जो देवी कर जाप करावे ॥

जो नर कहँ ऋण होय अपारा ।

सो नर पाठ करे शतबारा ॥

निश्चय ऋणमोचन होइ जाई ।
जो नर पाठ करे मन लाई ॥

अस्तुति जो नर पढ़ए पढ़ावे ।
या जग में सो बहु सुख पावे ॥

जाको व्याधि सतावे भाई ।
जाप करत सब दूरि पराई ॥

जो नर अति बन्दी महँ होई ।
बार हजार पाठ कर सोई ॥

निश्चय बन्दी से छुटि जाई ।
सत्य वचन मम मानहु भाई ॥

जापर जो कछु सङ्कट होई ।
निश्चय देविहिं सुमिरै सोई ॥

जा कहँ पुत्र होय नहिं भाई ।
सो नर या विधि करै उपाई ॥

पाँच वर्ष सो पाठ करावै ।
नौरातर महँ विप्र जिमावै ॥

निश्चय होय प्रसन्न भवानी ।
पुत्र देहि ताकहँ गुणखानी ॥

ध्वजा नारियल आनि चढ़ावै ।
विधि समेत पूजन करवावै ॥

नित प्रति पाठ करै मनलाई ।
प्रेम - सहित नहिं आन उपाई ॥

यह श्रीविन्ध्याचल चालीसा ।
रङ्क पढ़त होवै अवनीसा ॥

यह जनि अचरज मानहु भाई ।
कृपा-दृष्टि जापर होइ जाई ॥

जै जै जै जग मातु भवानी ।
कृपा करहु मोहिं पर जन जानी ॥

इति श्रीविन्ध्येश्वरी-चालीसा समाप्ता ।

Proofread by Rajesh Thyagarajan

shrI Chalisa
pdf was typeset on December 4, 2022

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*